**हनुमानजी की व्यक्ति पहचानने की कला**

|  |  |
| --- | --- |
| ISBN: 978-1-960627-06-3 | **आदित्य शुक्ल**  *Xavier Institute of Management, Jabalpur* (mehul.chauhan@ximj.ac.in) |

*एक सच्चे कर्मनिष्ठ व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है । मोहनदास कर्मचंद गाँधी, महात्मा, बापू के नाम से जाने जाने वाले गाँधी जी ऐसे ही कर्मनिष्ठ लोगों में से एक हैं, जिनका जीवन भारतीयों के लिए आदर्शप्राय रहा है । उन्होंने अपनी कर्मनिष्ठता, शक्ति एवं युक्ति से भारतीयों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया । उनका जीवन कहीं न कहीं श्री राम के जीवन से प्रभावित था । राम शान्ति के संवाहक थे, तो गाँधी जी शान्ति के पुजारी सिद्ध होते हैं । राम ने सत्य के मार्ग पर चलकर रामराज्य की स्थापना की तो, गाँधी जी ने शान्ति से स्वराज्य की स्थापना की । राम ने धर्म और न्याय के लिए राजसी ठाठ-बाट का त्याग किया, गाँधी जी ने सत्य के राह पर अग्रसर होने के लिए अपना तन-मन समर्पित कर दिया । गाँधी जी ने ‘सत्य को ही ईश्वर घोषित किया है । वे ईश्वर राम को मन, वचन और कर्म से सत्य के रूप में देखते थे’ (देशबंधु-5.3.2009) । गाँधी की गाथा, राम की गाथा से अभिन्न नहीं है ।*

1. **प्रस्तावना**

रामायण हम भारतीयों के लिए एक मुख्य ग्रन्थ है । वाल्मीकि कृत रामायण एवं तुलसीदास कृत रामचरितमानस हमारे आधार ग्रन्थ हैं और मानव जीवन को सुधारने के लिए आवश्यक सभी मूल्यों को प्राप्त करने के लिए ये सहायक ग्रन्थ सिद्ध होते हैं । राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक क्षेत्र में होने वाली सभी समस्याओं का समाधान हमें रामायण में मिल जाते हैं । रामायण के सभी पात्र, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक उनसे हमें सीख अवश्य प्राप्त होती है । आदर्श पिता, माता, भ्राता, परिवार, संतान, गुरु-शिष्य संबंध, मौलिक एवं नैतिक गुणों को आत्मसात करने के लिए कोई न कोई पात्र हमारे सामने प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाते हैं और उनका हम स्वाभाविक अनुकरण करने लगते हैं ।

समय के प्रवाह में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए आदर्शप्राय बन जाता है । उसकी विशेषताएँ, उसका व्यक्तित्त्व, उसकी छवि इतनी आकर्षित होती है कि उन्हें हम अपना प्रिय बना लेते हैं और उनके गुणों को आत्मसात करने लगते हैं । व्यवहार कुशलता, समानता की भावना, मृदु एवं प्रिय भाषण, युक्ति संगत बातें, सभी को साथ लेकर चलने की भावना, भेदभाव हीन व्यवहार, आकर्षित व्यक्तित्त्व, उनकी छवि को और भी पुष्ट करने लगती हैं । बापू के नाम से जाने जाने वाले मोहनदास कर्मचंद गाँधी के लिए सूर्यवंशी राजा रामचन्द्र आदर्श थे। राम और गाँधी जी के जीवन में बहुत सी समानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं । दोनों ही अपनों के लिए त्याग-भावना लिए हुए रहते थे । दोनों ने अपना समस्त जीवन दूसरों के लिए समर्पित कर दिया । राम अपने राजसी सुख-भोग का त्याग कर माता-पिता की इच्छानुसार वनवास जाने को तत्पर हो गए थे । गाँधी जी ने समाज और देश में व्याप्त भेदभावना को मिटाने के लिए अन्न-वस्त्र का त्याग कर तन-मन के साथ देशोद्धार में लग गए थे । दोनों ही का जीवन आज के मानव के लिए आदर्शप्राय है और हमेशा रहेगा ।

1. **विस्तार**

मानव भक्ति और श्रद्धा के साथ भगवान में विश्वास रखकर उनकी नित्य पूजा और अर्चना करता है । भगवान को किसी ने भी प्रत्यक्ष रूप में नहीं देखा है, किन्तु उसे गूँगे की गुड़ की भांति अनुभव अवश्य किया है । ‘मानव सेवा ही माधव सेवा है, राम सेवा है, मानते हुए अनेक महापुरुषों ने अपने जीवन को लोक कल्याण हेतु समर्पित कर दिया, इनमें से एक हैं - महात्मा गाँधी । राम उत्तर वैदिक काल के दिव्य महापुरुष और मर्यादापुरुषोत्तम माने जाते हैं तो गाँधी भारत के भाग्य विधाता, युग प्रवर्तक और अंग्रेज़ों की दासता से भारतीयों को मुक्त कराने वाले महायोद्धा सिद्ध हुए ।

रामायण हमें ज्ञान, भक्ति, नीति, सदाचार का पाठ पढ़ाता है । किसी भी जाति, वर्ग या वर्ण के लोग रामायण का पाठ कर उसे ग्रहण करने में सक्षम दिखाई पड़ते हैं । महात्मा गाँधी के जीवन से जुड़ी अनेक प्रसंगों का अध्ययन करने पर हमें यह ज्ञात होता है कि गाँधी जी रामायण से अत्याधिक प्रभावित हुए थे और श्री रामचन्द्र जी को वे अपना आदर्श मानते थे । वे राम के गुणों का अनुकरण अपने जीवन पर्यंत करते रहे । वे स्वयं कहते हैं कि, ‘रामायण एक साहित्य या इतिहास नहीं है, इसका आचरण हमें हर दिन, हर पल अपने जीवन में करते रहना चाहिए’। (CWMG 88. 155) उनके अनुसार, ‘सद्व्यवहार का सतत प्रयास मनुष्य में निहित बुराई को समूल नष्ट कर देती है’ । (Gandhiji's concept of value-based living -K.S. Narayanaswamy, 1999) । ‘नई ऊँचाई को छूने के लिए हमें अपनी मानसिक और मौलिक मूल्यों पर निरन्तर कार्य करना चाहिए’ ।

गाँधी ने एक बार कहा था कि, ‘मैं रामायण को सभी भक्ति साहित्य में सबसे बड़ी पुस्तक मानता हूँ । मेरे हृदय ने पहले ही सत्य के रूप में ईश्वर को जान लिया था । उनके उच्चतम गुण और नाम को पहचान लिया था । मैं सत्य को राम के नाम से पहचानता हूँ । संकट के समय एक ही नाम ने मुझे बचाया है और अभी भी मुझे बचा रहा है’ । (Young India, 1925)

उनके लिये राम सत्य के अवतार थे और सत्याग्रह के मार्गदर्शक । जिस तरह राम ने राज्याभिषेक से ठीक पहले, वनवास के प्रति उत्साह दिखाया था, भरत को सिंहासन पर बिठाना स्वीकार किया था, वह किसी भी पीढ़ी के लिए आदर्शप्राय है ।

रघुकुल के राजा श्री राम के लिए आदिकवि वाल्मीकि ने जो भी लिखा है, वह महात्मा गाँधी पर भी उपयुक्त होता है - आत्मनियंत्रित, संयमशील, बुद्धिमान, न्यायप्रिय, वाणी में कुशल, दृढ़संकल्पी व सत्य की पहचान रखने वाले दिव्य पुरुष ।

बापू का जीवन धर्म, राजनीति, आत्ममूल्यांकन, कर्म और मोक्ष का पर्याय रहा है । इन सभी ने उन्हें अन्याय, साम्राज्यवाद, शोषण और भेदभाव के विरुद्ध दृढ़ता के साथ सामना करने में सक्षम बनाया है । उन्होंने ‘यंग इंडिया’ में लिखा है, ‘अपने राज्य को त्यागकर और सत्य एवं वचन-पालन के लिए वन में रहकर राम ने दुनिया के लिए महान आचरण का दृष्टांत प्रस्तुत किया है’ । (Young India, 1925)

भारत के राष्ट्र पिता का मानना था कि रामनाम के साथ-साथ धर्म पालन का भी महत्त्व है । वे कहते हैं, ‘मैं धर्म पालन का अभ्यास किए बिना अहिंसा का अभ्यास नहीं कर सकता और अहिंसा का अभ्यास किए बिना सत्य की खोज असम्भव है और सत्य के सिवा कोई धर्म नहीं है’ । (Navjivan, 1924)

‘सत्य राम है, नारायण है, अल्लाह है’ । बापू ने राम को न केवल एक आदर्श पुरुष के रूप में बल्कि एक आदर्श पति, सत्य, अहिंसा, न्याय, समानता और विषम परिस्थितियों के स्वामी के रूप में देखा था । उन्होंने दमनकारी अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ लड़ाई में भारतीयों को प्रेरित करने के लिए अयोध्या के राजा का आह्वान किया था । महात्मा गाँधी ने अंग्रेज़ों के शासन की तुलना रावणराज्य से की थी । उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के अंग्रेज़ों द्वारा शासित भारत को रावणराज्य कहा था । उनके शब्दों में - ‘वर्तमान सरकार कोई रामराज्य नहीं है । यह रावणराज्य तुल्य है और उसे मुक्त होना ही होगा’ । उन्होंने भारतीयों से आग्रह किया था, कि वे दीवाली तभी मनाए जब देश रावणराज्य (ब्रीटिश राज्य) से मुक्त हो जाए, तब तक हमारे लिए ये वनवास तुल्य है, उमंग से हीन नीरस मनोवृत्ति से दीवाली मनाना वास्तविक भाव से शून्य हो कर मनाना होगा’ । (Navjivan, 1920)

बापू ने राम को अपने अंत:करण में स्थित माना है । उनका मानना है कि उनका जीवन श्री राम का है और वे उन्हीं के लिए जीवित हैं । उनके शब्दों में - ‘मैं उन्हें सभी पुरुषों में देखता हूँ, इसीलिए सभी पिता, भाई और अपनी आयु के सभी मनुष्यों में उन्हें पाता हूँ’ । भंगी (अछूत) और ब्राह्मण में मैं, एक ही राम को देखता हूँ और उन दोनों को नमन करता हूँ’ । (Navjivan, 1924)

बापू ने हमेशा सबको एक समान माना था, फिर चाहे वह एक अछूत हो या ब्राह्मण । राम ने गुह को बिना किसी भेदभाव के अपने गले लगा लिया था और पादप्रक्क्षालन करने की अनुमति भी दे दी थी । गाँधी जी के लिए सभी धर्म एक समान थे और उन्होंने देशवासियों को यही समझाने का प्रयास किया था कि चाहे तुम ईश्वर को किसी भी नाम से याद करो, वह सभी के लिए एक ही है । उन्होंने भारतीयों को लिखे गए तालिसमान में कहा था कि यदि हम अपने भीतर के डर को हटाना चाहते हैं तो राम नाम से उपयुक्त कोई उपाय नहीं है । राम नाम एक अमोघ मंत्र है, वह निराकार है, वह महान है’ । (Navjivan, 1946)

महात्मा गाँधी ने रामराज्य का आदर्श प्रस्तुत करते हुए भारतीयों को स्वराज्य पाने के लिए प्रेरित किया था । उन्होंने कहा था, हम पूरी तरह से भारतीयों द्वारा प्रशासित एक सरकार बना सकते हैं । हमारे सामने हमारे देश में राम-राज्य का उदाहरण है । हमें अंग्रेज़ी हुकूमत पर निर्भर होने की ज़रूरत नहीं है’ । (CWMG 1921)

बापू का मानना था कि भारत एक सफल देश तब तक नहीं बन सकता जब तक हम सभी देशवासियों को बराबर नहीं मानेंगे । भेदभाव की भावना को उन्होंने राष्ट्र की कमज़ोरी माना है। जैसे उन्होंने राम के प्रति अपने प्रेम व आदर भाव को व्यक्त किया है, वैसे ही अछूतों के प्रति अपनी प्रेम भावना को आदर भाव माना है । उन्होंने लिखा है कि ‘जहाँ अछूतों का अनादर हो वहाँ मैं नहीं रह सकता, ठीक उसी तरह जहाँ राम नाम का उच्चारण नहीं हो रहा है वहाँ एक रामभक्त नहीं रह सकता’ । (CWMG 1925)

वे इस बात पर ज़ोर देकर कहते हैं कि किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके गुणों से होती है न कि उसकी जाति से’ । वे अपनी बात की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि ‘क्षत्रिय में ब्राह्मण के गुण होने चाहिए यथा युधिष्ठिर और रामचन्द्र । (CWMG 1926) वे कहते हैं कि पाण्डव क्षत्रिय थे लेकिन उनमें ब्राह्मण के गुण थे और यही कारण है कि ये आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श बन गए हैं ।

1. **निष्कर्ष**

अन्तत: हम यह कह सकते हैं कि बापू ने अपने जीवन में रामायण से प्रभावित हो कर अनेक महत्त्वपूर्ण अंशों को अपने जीवन में अपनाया है और रामायण से सीख प्राप्त कर उनको अपने जीवन में अमल करने का प्रयास भी किया है । उन्होंने अपनी पुस्तक ‘मई एक्स्पेरिमेन्ट्स विथ ट्रूथ’ में अपने जीवन में सत्य को खोजने की बात कही है । भारतीय संस्कृति का सम्मान करने और इसकी रक्षा करने को कहा है । गाँधी जी का दृढ़ता के साथ मानना था कि कोई भी सभ्यता बिना सांस्कृतिक तत्वों और मानवीय मूल्यों के निर्मित नहीं हो सकती, यदि वह निर्मित होती है तो उस का अस्तित्व दीर्घ काल तक सम्भव नहीं है । वे कहते हैं कि जो व्यक्ति राम को स्मरण करना चाहते हैं, उनके लिए राम का रूप भिन्न-भिन्न होता है । हरेक व्यक्ति के लिए राम, अपनी-अपनी कल्पना के अनुरूप अलग-अलग रूप लिए हुए होना चाहिए । वह राम जो अन्त:करण पर राज कर सके । वह राम जो त्रुटि रहित हो, निराकार हो । वे दृढ़ता के साथ कहते हैं कि अहंकार से शून्य होकर ही हम उस राम को प्राप्त कर सकते हैं । (CWMG Vol. 36 – 164 & 165) अन्त में मैं अपने प्रपत्र को विराम देती हुई, गाँधी जी की कामना को व्यक्त करना चाहूँगी । वे कहते हैं कि, यदि भारत देश पुन: राम, सीता, लक्ष्मण और भरत को उत्पन्न कर सकेगा तो बिना विलम्ब के इसकी प्रगति शुरू हो जाएगी । (CWMG Vol. 9 - 499)

1. **संदर्भ ग्रंथ**
2. Gandhiji heritage portal - The collected works of Mahatma Gandhi (1-100)
3. Young India – epaper
4. Gandhiji's concept of value-based living - K.S. Narayanaswamy
5. Navjivan - e-newspaper
6. Wikipedia
7. Deshbandu – epaper
8. Ramayana – Valmiki
9. My experiments with truth